

उत्तराध्यायाः (फोल्डर नं. ०२५६८)

मूल - श्री जयकीर्तिसूरिजी

पूर्वसंस्करणसम्पादक - पण्डित हीरालाल हंसराज
नवीनसंस्करणसम्पादिका - साध्वी चन्दनबालाश्रीजी

प्रकाशक - भद्रंकर प्रकाशन अमदावाद

आवृत्ति-१, प्रकाशन वर्ष-२००९, पृष्ठ - ३५०

मुख्य टाईटल

श्रुतभक्ति - अनुमोदना

प्रकाशकीय -----	७-८
उत्तराध्ययन ऐक आगमग्रंथ -----	८-१०
संपादकीय -----	११-२५
१-३६ अध्यायानां विषयदिग्दर्शनम् -----	२७-४०
दीपिकाटीकासमलङ्कृता उत्तराध्याया (१) १ - १९ अध्याया	
प्रथमं विनयश्रुतमध्ययनम् -----	३-२१
द्वितीयं परीषहाध्ययनम् -----	२२-५५
तृतीयं चातुरङ्गीयमध्ययनम् -----	५६-७१
चतुर्थं प्रमादऽप्रमादाख्यध्ययनम् -----	७२-८३
पञ्चममकाममरणीयाध्ययनम् -----	८४-९७
षष्ठं क्षुल्लकनिर्ग्रन्थीयमध्ययनम् -----	९८-१०७
सप्तममौरभ्रीयमध्ययनम् -----	१०८-११८
अष्टमं कापिलीयाध्ययनम् -----	११९-१२८
नवमं नमिप्रव्रज्याध्ययनम् -----	१२९-१५०
दशमं द्रुमपत्रकनामाध्ययनम् -----	१५१-१६६
एकादशं बहुश्रुतपूजाध्ययनम् -----	१६७-१७७
द्वादशं हरिकेशीयाध्ययनम् -----	१७८-१९४
त्रयोदशं चित्रसम्भूतीयाध्ययनम् -----	१९४-२११
चतुर्दशमिषुकारीयाध्ययनम् -----	२१२-२२७
पञ्चदशं सभिक्षुकमध्ययनम् -----	२२८-२३४
षोडशं ब्रह्मचर्यसमाधिस्थानाध्ययनम् -----	२३४-२४४
सप्तदशं पापश्रमणीयाध्ययनम् -----	२४५-२५०
अष्टादशं संयतीयाध्ययनम् -----	२५१-२८४
एकोनविंशं मृगापुत्रीयाध्ययनम् -----	२८५-३०६